Dr. P.K.Yadav

संयुक्त राष्ट्र संघ की उपलब्धियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा की परिभाषा हेतु 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना तात्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट के प्रयास से सम्भव हुआ। अपनी स्थापना से लेकर वर्तमान तक संयुक्त राष्ट्र संघ ने अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा की स्थापना साम्राज्यवाद की समाप्ति, मानवाधिकार के विकास सहित लोकतन्त्र के विकास में महती भूमिका का निर्वहन किया है। ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ पूर्णतः सफल हो गया है अथवा इसमें संशोधन की आवश्यकता नहीं है परन्तु इस संगठन की सफलता का प्रतिशत असफलताओं की तुलना में अधिक है संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर निर्माताओं के अपेक्षा के अनुरूप खड़ा उतरता तो वास्तविक अर्थ में विश्व शान्ति व सुरक्षा को प्राप्त किया जा सकता था। इस संगठन की उपलब्धि एवं विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ उपस्थित होती रही हैं

स्थापना काल से लेकर शीतयुद्ध की समाप्ति तक कोरिया की समस्या ने न केवल सुरक्षा परिषद् बल्कि सम्पूर्ण U.N.O की गतिविधियों को नकारात्मक रूप में प्रभावित कर दिया था। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अमरीकी प्रभुत्व से U.N.O आरोपित एवं बाधित हुआ है। उग्र सम्प्रभुता नीति परम्परागत अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था आतंकवाद, क्षेत्रीयतावाद तथा U.N.O की संरचनात्मक एवं प्रक्रियात्मक कमी के कारण भी इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का विकास अपेक्षित रूप में नहीं हो पाया है। फिर भी यू॰एन॰ओ एक सीमा तक असफलताओं के बाद भी सफलताओं को प्राप्त किया है

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की स्थापना में U.N.O की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है तथा चार्टर में इस संगठन का दायित्व भी इसी क्षेत्र में बताया गया है। U.N.O ने ईरान समस्या (1946), यूनान समस्या (1948), कोरिया संकट (1950), स्वेज नहर संकट (1956), कांगो संकट (1960)

ईरान-ईराक विवाद (1980-88), नामीबिया संकट (1988), खाड़ी संकट I (1990), इजराइल लेबनान युद्ध समस्या (2006), ट्यूनीशिया-लीबिया एवं अन्य अरब देश समस्या (2010-11) में सफलता प्राप्त की है। दूसरी ओर बर्लिन समस्या अरब इजरायल विवाद इत्यादि में U.N.O की भूमिका सफल नहीं हो पायी है। खाड़ी संकट II (2003) में अमरीकी प्रभुत्व के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ की काफी आलोचना की गई है। मौटे तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा में संयुक्त राष्ट्र संघ ने यथा सम्भव महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद की समाप्ति में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका महत्वपूर्ण है इसने 1960 में साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद की समाप्ति हेतु घोषणा पत्र जारी किया था तथा उसी का प्रतिफल हुआ कि आज सैद्धान्तिक रूप में साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद को समाप्त करते हुए लोकतन्त्र स्थापित हो गया है।

कहना होगा कि लोकतन्त्र के विकास में इस संगठन ने महती भूमिका का निर्वहन किया है। इस दिशा में यू०एन०ओ के महत्त्वपूर्ण प्रयास से ही आज इसके सदस्य देश की संख्या 19 पहुँच गयी है। आज दुनिया का कोई भी देश किसी देश के इच्छा के विरुद्ध उस पर प्रभुत्व नहीं रख सकता है।

यू०एन०ओ ने मानवाधिकार के विकास में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है इसने 10 दिसंबर, 1948 को मानवाधिकार घोषणा घोषित किया जिसके 30 अनुच्छेद है। इन अनुच्छेद के अन्तर्गत मानव के विकास तथा अधिकारों के सुरक्षा हेतु अनेक प्रकार से प्रयास किए गए है मानवाधिकार के विकास के लिए 1963 में रंगभेद नीति के समाप्त करने की बात की गई। इन देशों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए 1992 तक आते आते सम्पूर्ण विश्व में रंगभेद नीति की समाप्ति हो गई। U.N.O के प्रयास से ही 1993 में विएना सम्मेलन हुआ, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र से

अपने अपने राज्यों में मानवाधिकार आयोग गठित करने का अनुरोध किया गया। आलोचनाओं के बाद भी U.N.O मानवाधिकार के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय यातायात के विकास में यू.एन.ओ की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यू.ए.ओ. के द्वारा आज अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व किया जा रहा है। प्रथम पृथ्वी सम्मेलन द्वितीय पृथ्वी सम्मेलन, ओजोन पर संरक्षण हेतु क्योटो सम्मेलन इत्यादि महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (U.N.D.P) सहित गैर सरकारी संगठनों के द्वारा यू.एन.ओ. के नेतृत्व में सतत विकास तथा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। आज U.N.O विश्व के देशों को एक मंच पर खड़ा करके अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क के विकास की दिशा में महती भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

लोकतन्त्र के विकास में संयुक्तराष्ट्र संघ ने कम महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन नहीं किया। U.N.O ने साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद की समाप्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को स्वीकार कर लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया है। सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र के विकास में U.N.O ने रंगभेद की समाप्ति पर सबसे अधिक बल दिया है। रंगभेद के विरोध में U.N.O के नेतृत्व में प्रथम द्वितीय तृतीय तथा चतुर्थ सम्मेलन हुआ 1978, 1983, 2001 तथा 2009 में जेनेवा में नस्लभेद के विरुद्ध सम्मेलन हुआ जिसे डरबन 2 या डरबन रिव्यू (Revi- कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को यूनीसेफ, ILO, F.L.O J.F.C इत्यादि द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं तथा लगातार किए जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास में भी संयुक्त राष्ट्र संघ के विशिष्ट अभिकरणों ने

महती भूमिका का निर्वहन किया है आज विश्व के किसी भी क्षेत्र की समस्या U.N.O की समस्या बन गयी है तथा इस दिशा में इसके द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय विधि के विकास में, निःशस्त्रीकरण की स्थापना तथा आतंकवाद की समाप्ति में UN.O ने महत्वपूर्ण प्रयास किया है। U.N.O के अधिक से अधिक सदस्य देश इस पर सहमत होगए हैं कि स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय विश्व अदालत गठित की जाए जिसमें मानवाधिकार उल्लंघन युद्ध, अपराध जैसे विषयों पर निष्पक्ष निर्णय दिए जाए। सम्पूर्ण विश्व के देश हथियारों के नियन्त्रण के पक्ष में है। विश्व के देशों द्वारा परमाणु शक्ति के शान्तिपूर्ण प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। विश्व शान्ति हेतु पूर्व महासचिव कोफी अन्नाह के प्रयास से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक सम्मेलन सम्पन्न हुए हैं। अगस्त 2000 में न्यूयार्क में विश्व धार्मिक एवं अध्यात्मिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें

विश्व के सभी देशों से सभी धर्मों के लगभग 1500 से अधिक धार्मिक नेताओं ने भाग लिया जिसे आतंकवाद की समाप्ति की दिशा में धार्मिक सम्मेलन में कहा गया है। यह उल्लेखनीय है कि U.N.O के महत्वपूर्ण अंग महासभा ने 24 दिसम्बर 1994 आतंकवाद के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया तथा इसकी समाप्ति हेतु विश्व के सभी देशों को एक होने की बात कही।

विवेचन से स्पष्ट है कि U.N.O. ने मानवीय जीवन के सभी क्षेत्रों में अनेकानेक उपलब्धियों को प्राप्त किया है। 21वीं शताब्दी में इस संगठन के द्वारा पर्यावरण संरक्षण उपलब्धि तथा आतंकवाद की समाप्ति सतत विकास निः शस्त्रीकरण सहित लोकतन्त्र के विकास सहित महत्वपूर्ण रूप में कार्य किए जा रहे हैं, 2008 में आण्विक निः शस्त्रीकरण पर महासभा ने बहुत अधिक बल दिया तथा 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया

जाता है संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन दिसम्बर 2007 में बाली (इण्डोनेशिया में सम्पन्न हुआ। ~~पूर्व~~ वर्ष 2009 कोपेनहेगन में सम्मेलन हुआ 21वीं शताब्दी में UN.O का महत्वपूर्ण लक्ष्य पर्यावरण विकास है तथा महासचिव बान की मून ने भी इसके प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। स्पष्टतः U.N.O चार्टर के उद्देश्यों को व्यापक रूप में सफल बनाने का प्रयास किया है तथा 21वीं शताब्दी में पर्यावरण संरक्षण सहित सतत् विकास की दिशा में महत्वपूर्ण रूप में कार्य कर रही है।